Raghhvendra Krishna Pratap
944, Rameshwarpuri, Basti-272001
India

पंचाशती, कलीसिया का जन्मदिवस और कलीसिया का जीवन–लक्ष्य

फादर स्टीवेन शेरर, एमएम, टीएचडी

पंचाशती का प्रवचन, 12 जून 2011
प्रेरितों.2:1–11; भजनसंहिता. 103:1; कुरिन्थुस. 12: 3–7, 12–13; योहन. 20: 19–23.

''वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और जो वाणी का वरदान पवित्र आत्मा ने उन्हें दिया, उस के अनुसार भिन्न–भिन्न भाषाओं मे बोलने लगे''(प्रेरितों. 2:4)।
आज हम पंचाशती के चमत्कार का उत्सव मना रहे हैं, जब येशु के शिष्य पवित्र आत्मा से परिपूरित हो गये और और हमारे रक्षक येशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के सुसमाचार – हमारे पापों के लिये क्षमायाचना ,पश्चाताप और बपतिस्मा, पवित्र आत्मा की भेंट पाने के लिये येशु मे विश्वास की आवश्यकता और उनमें एक नवीन जीवन– का उपदेश देने लगे। इसी दिन कलीसिया का जन्म हुआ, और शिष्य–गणो ने शक्ति से अपने जीवन–लक्ष्य का उपदेश करना और येशु जो मसीहा, प्रभु और संसार के रक्षक हें, मे विश्वास के लिये लोगों का धर्म परिवर्तन प्रारम्भ किया। पंचाशती के दिन अपने पहले प्रवचन में संत पतरस ने कहा, '' आप लोग पश्चाताप करें। आप लोगों मे से प्रत्येक व्यक्ति अपने–अपने पापों की क्षमा के लिये येशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लें। इस प्रकार आप पवित्र आत्मा का वरदान प्राप्त करेंगे''(प्रेरितों. 2:38)।
पंचाशती के दिन से लेकर आज तक, पवित्र आत्मा ने संसार के चेहरे के नवीनीकरण का अपना कार्य जारी कर रखा है। पवित्र आत्मा हमारे उपदेशात्मक शब्दों को शक्ति देती है, जिससे जो लोग उन्हें विश्वास से स्वीकार करते है, उनको ये सुसमाचार नवीन जीवन प्रदान करता है। परमेश्वर हमको प्रेम करता है इसीलिये उसने हमारी रक्षा के लिये अपने एकलौते पुत्र को भेजा, और '' यदि परमेश्वर ने हमसे इतना प्रेम किया, तो हमको भी एक दूसरे से प्रेम करना चाहिये''(1 योहन. 4:11)। येशु के शिष्यों ने दूसरों के लिये अपना प्रेम उनको पवित्र आत्मा द्वारा दी हुई शक्ति और साहस की अभिव्यक्ति उनको येशु मे आस्था से मुक्ति का उपदेश देकर की। वे पृथ्वी की सुदूर सीमा तक उनके साक्षी थे (प्रेरितों. 1:8)। इसी प्रकार पवित्र आत्मा ने उनको पृथ्वी का नवीन रूप बनाने के लिये योग्यता देते हुए प्रेरित किया। येशु के शिष्यों ने हजारों लोगों को शक्ति से येशु का सुसमाचार सुनाने और उनका जीवन पूरी तरह बदल देने का, उनके पाप क्षमा कर देने का और उनको परमेश्वर से जोड़ने का वरदान प्राप्त किया था।
यह संसार की सेवा की भेंट का उपयोग करते हुए एक दूसरे से प्रेम करने का रास्ता है। परंतु उस पवित्र आत्मा की दी हुई और भेंटें भी हैं। प्रत्येक व्यक्ति उसके लिये उपयुक्त भेंट प्राप्त करता है, और यह सभी भेंटें कलीसिया के निर्माण की, और इस प्रकार संसार का रूप बदलने की भेटें हैं। संत पौलुस को गैर–यहूदियों को उनकी मुक्ति और रूपांतरण के लिये येशु का रहस्य उपदेश करने का वरदान मिला था। इस प्रकार पवित्र आत्मा ने उनका उपयोग संसार के रूप परिवर्तन के लिये किया। उन्होने परमेश्वर के रहस्य का पूरा उपदेश दिया।'' जो बातें आपके लिये हितकर थीं उन्हें बताने में मैने कभी संकोच नहीं किया, बल्कि मैं सबके सामने और घर–घर जाकर उनके संबंध मे यहूदियों और यूनानियों दोनो के सम्मुख स्पष्ट शिक्षा देता रहा कि वे पश्चाताप कर परमेश्वर की ओर अभिमुख हो जाएं और हमारे प्रभु येशु मे विश्वास करें (प्रेरितों. 20:20–21)।

यह कलीसिया के लक्ष्य का सार है। यही कारण है कि आज भी धर्मप्रचारकों को येशु का उपदेश सुनाने के लिये और यह सुसमाचार देने के लिये– कि येशु ने हमारे पापों के लिये दण्ड सहन करने के लिये क्रूस पर मृत्यु की यंत्रणा सहन की और उसमे विश्वास के द्वारा हम व्यक्तिगत रूपमे रक्षा पा सकते हैं और पूरी तरह क्षमादान पा सकते हैं– भेजा जाता है। कलीसिया के और भी लक्ष्य, जैसे विद्यालय और चिकित्सालय बनाना और उनका संचालन, दयालुता के कार्य इत्यादि हैं ,परंतु यह संसार की कलीसिया का हार्दिक लक्ष्य है कि सुसमाचार का उपदेश किया जाए, जैसा कि हमे प्रेरितों के कार्य मे संत पतरस और संत पौलुस के क्रिया–कलापों मे दिखाई देता है। संत पौलुस ने अपना जीवन यहूदियों और यूनानियों को, जो येशु मे विश्वास नहीं करते थे, क्रूस पर येशु की मृत्यु के उपदेश द्वारा मुक्ति प्राप्त करने के उपदेश देने मे व्यतीत किया। इन व्यक्तियों को उनके विश्वासों मे शांतिपूर्वक छोड़ देने का विचार, कि यह उन सबके लिये पर्याप्त है, उनके विचार मे कभी भी नहीं आया। वह जानते थे कि संसार के प्रत्येक व्यक्ति को परमेश्वर के द्वारा निर्धारित योजना कि उसका एकलौता पुत्र संसार की मुक्ति के लिये क्रूस पर मृत्यु को प्राप्त हो कर पुनर्जीवित हो , सुनने की आवश्यकता है।तब प्रत्येक व्यक्ति को परमेश्वर की मुक्ति का सुसमाचार सुन कर उसे स्वीकार का अस्वीकार करने का अवसर मिलेगा।

कलीसिया का लक्ष्य जो पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरित और योग्य बनाया गया है, को साम्राज्यवाद अथवा उपनिवेशवाद से कुछ लेना–देना नहीं है। यह आज से दो हजार साल पहले, रोमन साम्राज्य के दिनो से येरुशलेम मे प्रारंभ हुआ था, जब वह साम्राज्य मूर्तिपूजक था, और फिलिस्तीन के इन निरीह धर्मप्रचारकों ने अंत में पूरे साम्राज्य का धर्मपरिवर्तन कर दिया। कलीसिया का यह धर्म–प्रचार का कार्य सारे संसार में, जहां भी ईसाई हैं, चल रहा है। कोलम्बिया, कोरिया, मेक्सिको, फिलीपाइन्स और भारत के ईसाई धर्मप्रचारक सारी दुनिया मे धर्मप्रचार का कार्य करते हैं। मैं भारत के ईसाई धर्मप्रचारकों के जो कीनिया और अलास्का मे कार्य कर रहे हैं , जानता हूं। पवित्र आत्मा उन्हें लोगों को परमेश्वर मे नवजीवन प्रदान करने की शक्ति प्रदान करती है, जब यह श्रद्धा से स्वीकार किया जाता है। विदेशी बोलियों में बोलने का चमत्कार, जो आज घटित हुआ, यह संकेत देता है कि येशु का संदेश विश्व की सभी भाषाओं मे उपदेशित किया जाना चाहिये, पवित्र आत्मा के माध्यम से मानवता को येशु को संसार के सभी क्षेत्रों मे उपदेशित करके एकरूप बनाया जाना चाहिये।

येशु के शिष्यों को पवित्र आत्मा द्वारा लोगों के पापों का क्षमादान करने की भेंट दी गई थी। पुनर्जीवित येशु ने '' उन पर श्वास फूंका, और कहा, ' पवित्र आत्मा को ग्रहण करो, तुम जिन लोगों के पाप क्षमा करोगे, वे क्षमा किए गये और जिन लोगों के पाप क्षमा नहीं करोगे , वे क्षमा नहीं होंगे'''(योहन.20: 23)। इस प्रकार येशु ने अपने शिष्यों और उनके उत्तराधिकारियों का अपने नाम मे लोगों के पापों को क्षमा करने की शक्तिदी और संगति का संस्कार स्थापित किया । यह उनके लिये जो इस का उपयोग बहुधा करते हैं, एक बड़ा वरदान है। यह पाप करने और बुराइयों मे पड़ जाने वालों को, अपराध बोध की पीड़ा से मुक्त करता है और उनको विश्वास दिलाता है कि क्रूस पर येशु की मृत्यु के पुण्य से उनके पाप निश्चित रूप में क्षमा होंगे और उनसे दूर किये जाएंगे। यह चमत्कारी संस्कार उन सभी को जो इसको व्यक्तिगत रूपम` उपयोग करते हैं येशु की क्रूस पर मृत्यु के पुण्य से लाभन्वित करता है।

पंचाशती कलीसिया का जन्मदिन ओर उसका लक्ष्य है। हमारा राष्ट्रों को, जो उसे अभी भी नहीं जानते, सुसमाचार देने का अभियान आज ही शुरू हुआ है। यह आज का ही दिन है जिसमे हम हम इस लक्ष्य के लिये और इस व्यवसाय में अपना नवीनीकरण करें ।